दैनिक
उत्तम हिन्दू
स्थापना 1983
■ पंजाब ■ हरियाणा ■ हिमाचल ■ चंडीगढ़ ■ दिल्ली ■ उत्तर प्रदेश

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर : डा. चौधरी

आईसीएआर की डीडीजी, एडीजी सहित नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमैंट के 55 सदस्यीय दल ने गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का किया दौरा

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क

कुरुक्षेत्र/दुग्गलः आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है।

उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डा. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डा. राजबीर, डा. वेलमुरूगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे।

गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा करते नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमैंट के सदस्य।

कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के ओएसडी डा. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डा. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डा. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हैक्टेयर रहेगा।

आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर %कमल% का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी। विख्यात कृषि वैज्ञानिक डा. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपितु नमी और वाफसा की जरूरत होती है।

Delhi Edition Edition
Sep 04, 2024 Page No. 6
Powered by: erelego.com

आईसीएआर की डीडीजी, एडीजी सहित नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के 55 सदस्यीय दल ने गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का किया दौरा

कुरूक्षेत्र (दैनिक हाक): आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डॉ. राजबीर, डॉ. वेलमुरूगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रहेगा। आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर %कमल% का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी।

उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपितु नमी और वापसा की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आमतौर पर खेत की छह इंच, एक फीट या दो फीट मिट्टी के तत्त्वों की बात होती है जबकि सच्चाई यह है कि मिट्टी में फसलों के लिए आवश्यक सभी तत्त्वों का अथाह भण्डार है उस उन तत्त्वों को ऊपरी सतह पर लाने के लिए सही वातावरण उपलब्ध कराने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती, जीवाणुओं की खेती है। इसमें देशी गाय के गोबर-गोमूत्र से बने जीवामृत व घनजीवामृत के प्रभाव से जमीन के नीचे के मित्रजीव ऊपर आते हैं और जमीन को उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और धीरे-धीरे देश के कृषि वैज्ञानिक इसे स्वीकार भी कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर

गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा करते नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के सदस्य।

संवाद सहयोगी। कुरुक्षेत्र

आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एसके चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डॉ. राजबीर, डॉ. वेलमुरूगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे।

कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रहेगा।

आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर कमल का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

केंचुआ की भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े तीन किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपितु नमी और वापसा की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश भी डाला।

सोका टाइम्स
हरियाणा, बुधवार, 04 सितम्बर, 2024

दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर : डॉ. चौधरी

गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा करते नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के सदस्य।

सवेरा न्यूज/जसबीर दुग्गल

कुरुक्षेत्र, 03 सितंबर : आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डॉ. राजबीर, डॉ. वेलमुरुगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रहेगा। आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर ह्यकमलह्व का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपितु नमी और वापसा की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आमतौर पर खेत की छह इंच, एक फीट या दो फीट मिट्टी के तत्त्वों की बात होती है जबकि सच्चाई यह है कि मिट्टी में फसलों के लिए आवश्यक सभी तत्त्वों का अथाह भण्डार है उस उन तत्त्वों को ऊपरी सतह पर लाने के लिए सही वातावरण उपलब्ध कराने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती, जीवाणुओं की खेती है। इसमें देशी गाय के गोबर-गोमूत्र से बने जीवामृत व घनजीवामृत के प्रभाव से जमीन के नीचे के मित्रजीव ऊपर आते हैं और जमीन को उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और धीरे-धीरे देश के कृषि वैज्ञानिक इसे स्वीकार भी कर रहे हैं।

ड़िए
त्रों का
किया जाएगा।
ई की
यों के
ं रूप से चित्र
बर पर
म इन्हें सहर्ष
44319
53344